कंक्रीट के पुराने बांध भूकंपरोधी बनेंगे

कानपुर, शिक्षा संवाददाता: भारत में दशकों पहले कंक्रीट से बने बांधों को भूकंप से बचाने के लिए नई बांध तकनीक से मजबूत करने की जरूरत है। आईआईटी के साथ मिलकर अमेरिका के विशेषज्ञ इस पर काम करने को तैयार हैं।

यह तथ्य आईआईटी के सिविल इंजीनियरिंग विभाग में मंगलवार से शुरू हुई चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला में सामने आये। कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ प्रो. एके चोपड़ा ने बताया कि 1967 में भूकंप में पुणे का 'कोएना बांध' जिस तरह से टूटा-फूटा था, उसे लेकर कंक्रीट के बांधों को नयी तकनीक से मजबूती देने की जरूरत महसूस हुई। भारत में अधिकांश बांध 50 से 60 साल पुराने हैं जिनकी क्षमता दिनों दिन घट रही है। नयी तकनीक इन बांधों को ज्यादा मजबूत व ज्यादा सक्षम बना सकती है। भारत में अभी 'माडर्न डायनामिक्स एनालिस्टिक एंड मैथोडोलॉजी' तकनीक उपलब्ध नहीं थी। अब इसके तहत पुराने स्ट्रक्चर को बिना नुकसान पहुंचाए सुधारा जा सकता है। प्रशिक्षण कार्यशाला में कहा गया कि नये बांधों के निर्माण में इस तकनीक को शुरुआती दौर से ही लगाने से ही वह भूकंपरोधी रह सकेंगे। यूएस ब्यूरो ऑफ ल्युक्लेमेशन के प्रतिनिधि लॉरी के. नुस ने कहा कि किसी बांध का सर्वेक्षण कर वह नयी तकनीक के प्रयोग की संभावनाएं तलाशते हैं, फिर उसे भूकंपरोधी बनाने की डिजाइन तैयार करते हैं। भारत को इस तकनीक की काफी जरूरत है। उन्होंने 'जियोलॉजिकल' व सीस्मोलाजिकल इनवेस्टीगेशन फॉर कंक्रीट डेम्स' पर चर्चा की। उद्घाटन सिविल इंजीनियरिंग हेड डॉ. ओंकार दीक्षित ने किया। प्रो. सुधीर के जैन ने कार्यशाला के उद्देश्य बताए। देश के विभिन्न संस्थानों से 140 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। तकनीकी सत्रों में बांधों पर वातावरण के प्रभाव, भूकंप से खतरे व बचाव पर चर्चा हुई।

दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते डॉ. ओंकार दीक्षित।

जागरण 4/3/07